Boy

Girl

Model: Web-MilanPhal

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/04/1987	जन्म तिथि	30/04/1990
बुधवार	दिन	सोमवार
घंटे 10:15:00	जन्म समय	16:20:00 घंटे
घटी 10:06:41	जन्म समय(घटी)	26:35:19 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Gurgaon
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:27:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:01:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:56 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:12:19	सूर्योदय	05:42:57
18:38:35	सूर्यास्त	18:55:56
23:40:40	चित्रपक्षीय अयनांश	23:43:31

वृष	लग्न	कन्या
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	बुध
मेष	राशि	मिथुन
मंगल	राशि-स्वामी	बुध
भरणी	नक्षत्र	पुनर्वसु
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	गुरु
2	चरण	3
विष्कुम्भ	योग	धृति
गर	करण	गर
लू-लूनेश	जन्म नामाक्षर	हा-हर्षा
मेष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृष
क्षत्रिय	वर्ण	शूद्र
चतुष्पाद	वश्य	मानव
गज	योनि	मार्जार
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	आद्य
मृग	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 10वर्ष 3मा 23दि		28:04:11	वृष	लग्न	कन्या	13:00:56	गुरु 5वर्ष 6मा 11दि	
राहु		17:15:17	मीन	सूर्य	मेष	16:06:45	बुध	
24/07/2020		19:47:27	मेष	चंद्र	मिथु	28:43:22	11/11/2014	
24/07/2038		03:18:12	वृष	मंगल	कुंभ	13:23:54	11/11/2031	
राहु	06/04/2023	20:06:38	कुंभ	बुध व	मेष	21:39:52	बुध	08/04/2017
गुरु	29/08/2025	13:24:03	मीन	गुरु	मिथु	13:07:30	केतु	06/04/2018
शनि	05/07/2028	10:31:38	कुंभ	शुक्र	मीन	02:08:13	शुक्र	03/02/2021
बुध	23/01/2031	27:29:04	वृश्चि व	शनि	मक	01:35:50	सूर्य	11/12/2021
केतु	10/02/2032	17:49:18	मीन	राहु व	मक	18:19:06	चन्द्र	12/05/2023
शुक्र	10/02/2035	17:49:18	कन्या	केतु व	कर्क	18:19:06	मंगल	09/05/2024
सूर्य	05/01/2036	03:03:01	धनु	हर्ष व	धनु	15:44:58	राहु	26/11/2026
चन्द्र	06/07/2037	14:18:12	धनु	नेप व	धनु	20:47:47	गुरु	03/03/2029
मंगल	24/07/2038	15:39:45	तुला व	प्लूटो व	तुला	22:51:49	शनि	11/11/2031

23:40:40 चित्रपक्षीय अयनांश 23:43:31

लग्न-चलित

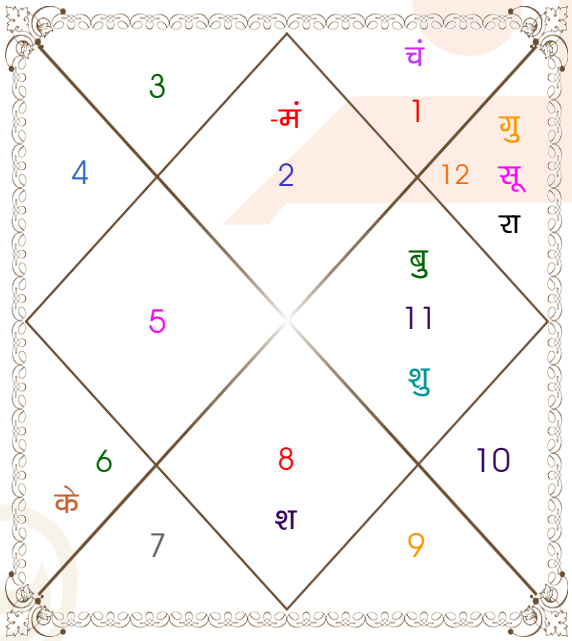

लग्न-चलित

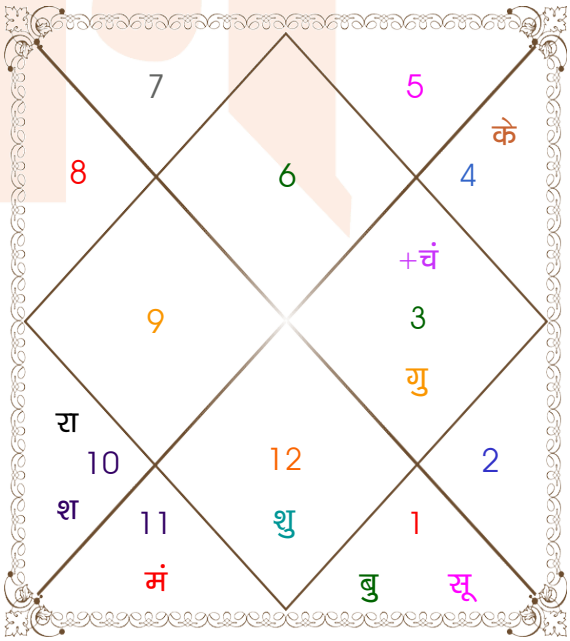

चन्द्र कुंडली

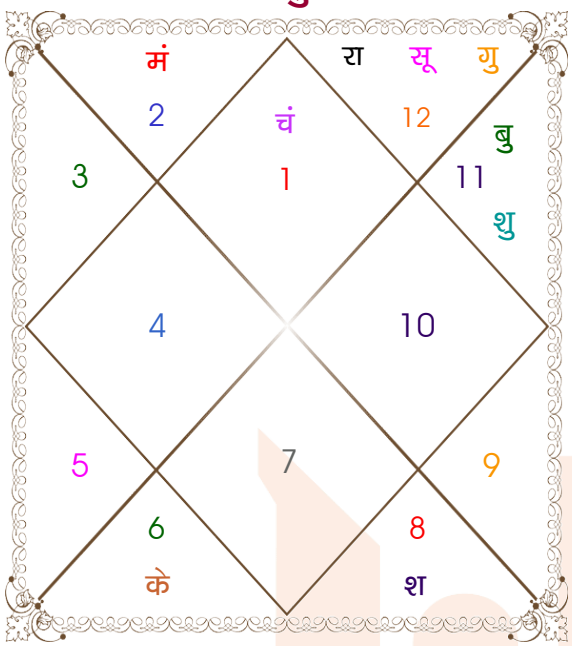

चन्द्र कुंडली

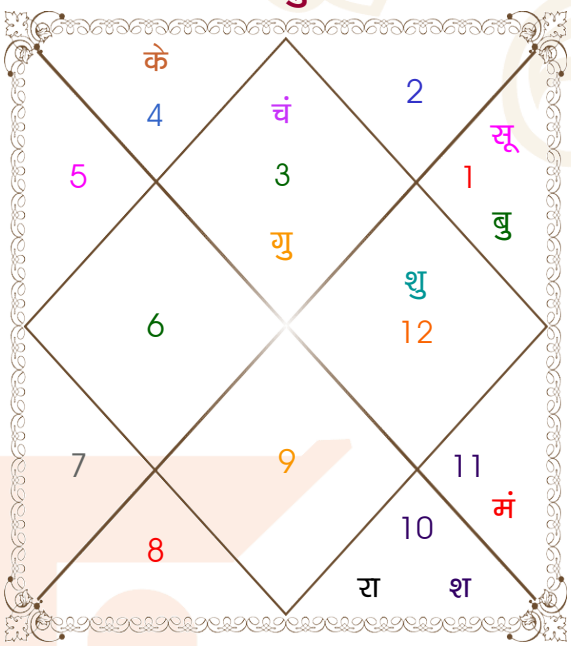

नवमांश कुंडली

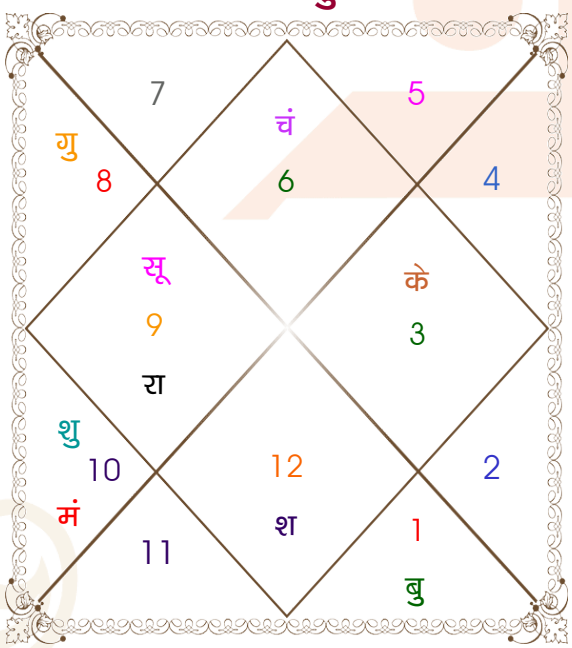

नवमांश कुंडली

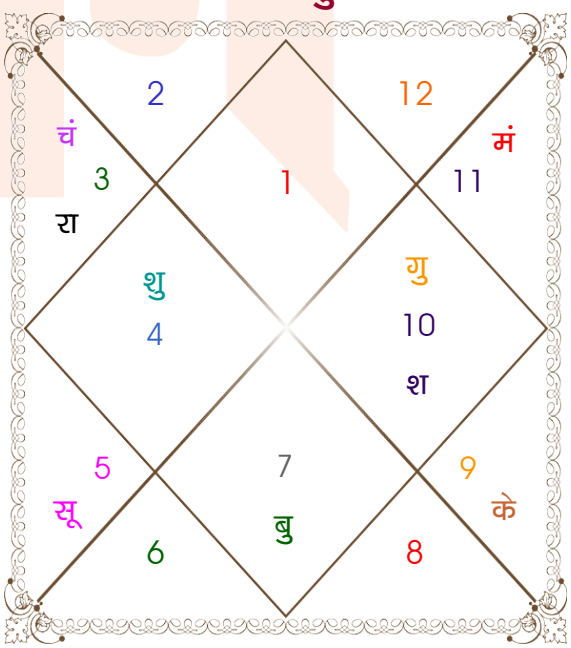

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 1 मास 28 दिन

के.पी. अयनांश : 23:34:33

फॉरच्युना : कर्क 00:42:29

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मीन	17:21:24	गुरु	बुध	बुध	शुक्र
चंद्र		मेष	19:53:35	मंगल	शुक्र	राहु	चंद्र
मंगल		वृष	03:24:20	शुक्र	सूर्य	शनि	बुध
बुध		कुंभ	20:12:46	शनि	गुरु	गुरु	गुरु
गुरु		मीन	13:30:10	गुरु	शनि	राहु	शनि
शुक्र		कुंभ	10:37:45	शनि	राहु	शनि	शनि
शनि	व	वृश्चि	27:35:12	मंगल	बुध	गुरु	मंगल
राहु		मीन	17:55:25	गुरु	बुध	बुध	राहु
केतु		कन्या	17:55:25	बुध	चंद्र	बुध	बुध
हर्ष		धनु	03:09:08	गुरु	केतु	सूर्य	राहु
नेप		धनु	14:24:19	गुरु	शुक्र	शुक्र	राहु
प्लूटो	व	तुला	15:45:52	शुक्र	राहु	शुक्र	चंद्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	28:10:19	शुक्र	मंगल	शनि	शनि
2	मिथु	21:23:39	बुध	गुरु	गुरु	चंद्र
3	कर्क	14:55:10	चंद्र	शनि	गुरु	गुरु
4	सिंह	12:06:29	सूर्य	केतु	बुध	शुक्र
5	कन्या	15:16:02	बुध	चंद्र	गुरु	चंद्र
6	तुला	22:39:49	शुक्र	गुरु	शनि	शुक्र
7	वृश्चि	28:10:19	मंगल	बुध	शनि	शनि
8	धनु	21:23:39	गुरु	शुक्र	गुरु	चंद्र
9	मक	14:55:10	शनि	चंद्र	गुरु	शुक्र
10	कुंभ	12:06:29	शनि	राहु	शनि	राहु
11	मीन	15:16:02	गुरु	शनि	गुरु	शनि
12	मेष	22:39:49	मंगल	शुक्र	शनि	शुक्र

भाव कुंडली

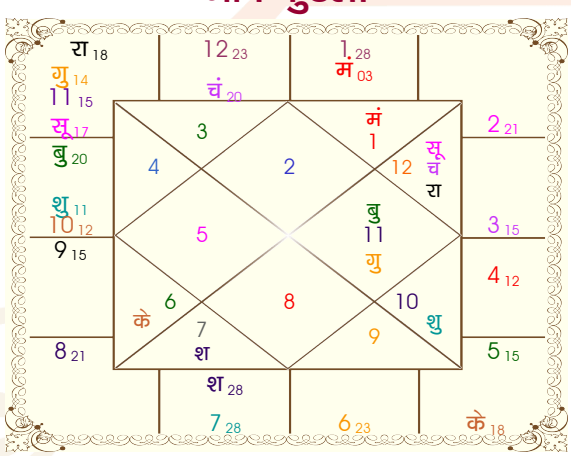

भोग्य दशा काल : गुरु 5 वर्ष 4 मास 26 दिन

के.पी. अयनांश : 23:37:07

फॉरच्युना : वृश्चिक 25:43:58

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मेष	16:13:09	मंगल	शुक्र	सूर्य	शुक्र
चंद्र		मिथु	28:49:46	बुध	गुरु	सूर्य	चंद्र
मंगल		कुंभ	13:30:18	शनि	राहु	बुध	मंगल
बुध	व	मेष	21:46:16	मंगल	शुक्र	गुरु	राहु
गुरु		मिथु	13:13:54	बुध	राहु	बुध	शुक्र
शुक्र		मीन	02:14:37	गुरु	गुरु	राहु	बुध
शनि		मक	01:42:14	शनि	सूर्य	गुरु	शनि
राहु	व	मक	18:25:31	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
केतु	व	कर्क	18:25:31	चंद्र	बुध	बुध	शनि
हर्ष	व	धनु	15:51:22	गुरु	शुक्र	सूर्य	गुरु
नेप	व	धनु	20:54:11	गुरु	शुक्र	गुरु	केतु
प्लूटो	व	तुला	22:58:13	शुक्र	गुरु	शनि	सूर्य

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	13:07:20	बुध	चंद्र	राहु	केतु
2	तुला	11:26:08	शुक्र	राहु	शनि	शुक्र
3	वृश्चि	11:53:13	मंगल	शनि	चंद्र	शुक्र
4	धनु	13:23:52	गुरु	शुक्र	शुक्र	शुक्र
5	मक	14:59:50	शनि	चंद्र	गुरु	शुक्र
6	कुंभ	15:24:19	शनि	राहु	शुक्र	शुक्र
7	मीन	13:07:20	गुरु	शनि	राहु	राहु
8	मेष	11:26:08	मंगल	केतु	शनि	गुरु
9	वृष	11:53:13	शुक्र	चंद्र	मंगल	चंद्र
10	मिथु	13:23:52	बुध	राहु	बुध	चंद्र
11	कर्क	14:59:50	चंद्र	शनि	गुरु	गुरु
12	सिंह	15:24:19	सूर्य	शुक्र	शुक्र	बुध

भाव कुंडली

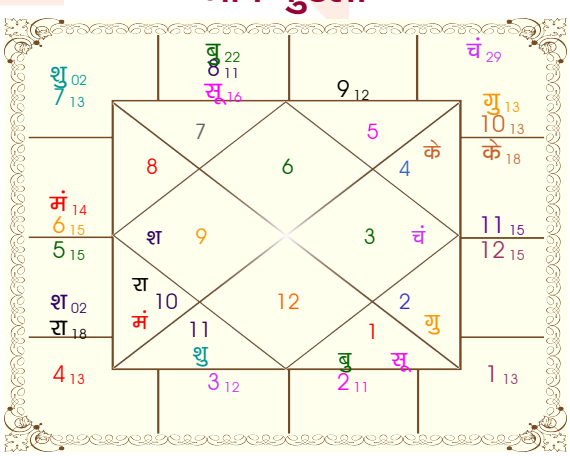

HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

Email : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- शुक्र-
2	सूर्य- बुध- शनि- राहु-
3	चंद्र- केतु-
4	सूर्य- मंगल-
5	सूर्य- बुध- शनि- राहु- केतु,
6	चंद्र- गुरु, शुक्र- शनि,
7	मंगल-
8	बुध- गुरु-
9	चंद्र, गुरु- शुक्र, शनि-
10	सूर्य, बुध+ गुरु+ शनि+ राहु,
11	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध- गुरु- शुक्र, राहु, केतु,
12	मंगल,

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध- केतु-
2	सूर्य- बुध- शुक्र-
3	मंगल-
4	चंद्र- गुरु- शुक्र- शनि,
5	मंगल+ गुरु, शनि- राहु,
6	सूर्य, बुध, शुक्र, शनि-
7	चंद्र- गुरु- शुक्र-
8	सूर्य, मंगल- बुध, शनि, केतु,
9	सूर्य- चंद्र, बुध- गुरु, शुक्र+
10	चंद्र, बुध- राहु, केतु-
11	चंद्र- राहु- केतु,
12	सूर्य- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 4- 5- 10, 11,
चंद्र	1- 3- 6- 9, 11,
मंगल	4- 7- 11, 12,
बुध	2- 5- 8- 10+ 11-
गुरु	6, 8- 9- 10+ 11-
शुक्र	1- 6- 9, 11,
शनि	2- 5- 6, 9- 10+
राहु	2- 5- 10, 11,
केतु	3- 5, 11,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 6, 8, 9- 12-
चंद्र	4- 7- 9, 10, 11-
मंगल	3- 5+ 8-
बुध	1- 2- 6, 8, 9- 10-
गुरु	4- 5, 7- 9,
शुक्र	2- 4- 6, 7- 9+
शनि	4, 5- 6- 8, 12-
राहु	5, 10, 11-
केतु	1- 8, 10- 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	राहु

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	सूर्य

विंशोत्तरी दशा

शुक्र 10 वर्ष 3 मास 23 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
01/04/1987		24/07/1997		24/07/2003	
24/07/1997		24/07/2003		24/07/2013	
	00/00/0000	सूर्य	11/11/1997	चंद्र	24/05/2004
	00/00/0000	चंद्र	12/05/1998	मंगल	23/12/2004
	00/00/0000	मंगल	17/09/1998	राहु	24/06/2006
	01/04/1987	राहु	12/08/1999	गुरु	24/10/2007
राहु	23/09/1987	गुरु	30/05/2000	शनि	24/05/2009
गुरु	24/05/1990	शनि	12/05/2001	बुध	24/10/2010
शनि	24/07/1993	बुध	18/03/2002	केतु	25/05/2011
बुध	24/05/1996	केतु	24/07/2002	शुक्र	22/01/2013
केतु	24/07/1997	शुक्र	24/07/2003	सूर्य	24/07/2013

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
24/07/2013		24/07/2020		24/07/2038	
24/07/2020		24/07/2038		24/07/2054	
मंगल	20/12/2013	राहु	06/04/2023	गुरु	10/09/2040
राहु	08/01/2015	गुरु	29/08/2025	शनि	25/03/2043
गुरु	15/12/2015	शनि	05/07/2028	बुध	30/06/2045
शनि	22/01/2017	बुध	23/01/2031	केतु	06/06/2046
बुध	20/01/2018	केतु	10/02/2032	शुक्र	04/02/2049
केतु	18/06/2018	शुक्र	10/02/2035	सूर्य	23/11/2049
शुक्र	18/08/2019	सूर्य	05/01/2036	चंद्र	25/03/2051
सूर्य	24/12/2019	चंद्र	06/07/2037	मंगल	29/02/2052
चंद्र	24/07/2020	मंगल	24/07/2038	राहु	24/07/2054

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
24/07/2054		24/07/2073		24/07/2090	
24/07/2073		24/07/2090		24/07/2097	
शनि	27/07/2057	बुध	21/12/2075	केतु	20/12/2090
बुध	05/04/2060	केतु	17/12/2076	शुक्र	19/02/2092
केतु	15/05/2061	शुक्र	18/10/2079	सूर्य	26/06/2092
शुक्र	15/07/2064	सूर्य	23/08/2080	चंद्र	25/01/2093
सूर्य	27/06/2065	चंद्र	23/01/2082	मंगल	24/06/2093
चंद्र	26/01/2067	मंगल	20/01/2083	राहु	12/07/2094
मंगल	06/03/2068	राहु	08/08/2085	गुरु	18/06/2095
राहु	11/01/2071	गुरु	14/11/2087	शनि	27/07/2096
गुरु	24/07/2073	शनि	24/07/2090	बुध	24/07/2097

गुरु 5 वर्ष 6 मास 11 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
30/04/1990		11/11/1995		11/11/2014	
11/11/1995		11/11/2014		11/11/2031	
	00/00/0000	शनि	14/11/1998	बुध	08/04/2017
	00/00/0000	बुध	24/07/2001	केतु	06/04/2018
	00/00/0000	केतु	02/09/2002	शुक्र	03/02/2021
	30/04/1990	शुक्र	01/11/2005	सूर्य	11/12/2021
शुक्र	24/05/1990	सूर्य	14/10/2006	चंद्र	12/05/2023
सूर्य	12/03/1991	चंद्र	15/05/2008	मंगल	09/05/2024
चंद्र	11/07/1992	मंगल	23/06/2009	राहु	26/11/2026
मंगल	17/06/1993	राहु	29/04/2012	गुरु	03/03/2029
राहु	11/11/1995	गुरु	11/11/2014	शनि	11/11/2031

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
11/11/2031		11/11/2038		11/11/2058	
11/11/2038		11/11/2058		10/11/2064	
केतु	08/04/2032	शुक्र	12/03/2042	सूर्य	28/02/2059
शुक्र	08/06/2033	सूर्य	12/03/2043	चंद्र	30/08/2059
सूर्य	14/10/2033	चंद्र	10/11/2044	मंगल	05/01/2060
चंद्र	15/05/2034	मंगल	10/01/2046	राहु	28/11/2060
मंगल	11/10/2034	राहु	10/01/2049	गुरु	17/09/2061
राहु	30/10/2035	गुरु	11/09/2051	शनि	30/08/2062
गुरु	05/10/2036	शनि	11/11/2054	बुध	06/07/2063
शनि	13/11/2037	बुध	11/09/2057	केतु	11/11/2063
बुध	11/11/2038	केतु	11/11/2058	शुक्र	10/11/2064

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
10/11/2064		11/11/2074		10/11/2081	
11/11/2074		10/11/2081		11/11/2099	
चंद्र	11/09/2065	मंगल	09/04/2075	राहु	24/07/2084
मंगल	12/04/2066	राहु	26/04/2076	गुरु	17/12/2086
राहु	12/10/2067	गुरु	02/04/2077	शनि	23/10/2089
गुरु	10/02/2069	शनि	12/05/2078	बुध	12/05/2092
शनि	11/09/2070	बुध	09/05/2079	केतु	30/05/2093
बुध	10/02/2072	केतु	05/10/2079	शुक्र	30/05/2096
केतु	10/09/2072	शुक्र	05/12/2080	सूर्य	24/04/2097
शुक्र	12/05/2074	सूर्य	11/04/2081	चंद्र	23/10/2098
सूर्य	11/11/2074	चंद्र	10/11/2081	मंगल	11/11/2099

HoroscopeCart
Mobile / WhatsApp : +91-7835830918
Email : contact@horoscopecart.com
Website : www.horoscopecart.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
06/04/2023		29/08/2025		05/07/2028	
29/08/2025		05/07/2028		23/01/2031	
गुरु	01/08/2023	शनि	10/02/2026	बुध	14/11/2028
शनि	18/12/2023	बुध	08/07/2026	केतु	08/01/2029
बुध	20/04/2024	केतु	06/09/2026	शुक्र	12/06/2029
केतु	10/06/2024	शुक्र	27/02/2027	सूर्य	29/07/2029
शुक्र	03/11/2024	सूर्य	20/04/2027	चंद्र	14/10/2029
सूर्य	17/12/2024	चंद्र	16/07/2027	मंगल	07/12/2029
चंद्र	28/02/2025	मंगल	15/09/2027	राहु	26/04/2030
मंगल	20/04/2025	राहु	18/02/2028	गुरु	28/08/2030
राहु	29/08/2025	गुरु	05/07/2028	शनि	23/01/2031

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
09/05/2024		26/11/2026		03/03/2029	
26/11/2026		03/03/2029		11/11/2031	
राहु	25/09/2024	गुरु	16/03/2027	शनि	05/08/2029
गुरु	27/01/2025	शनि	25/07/2027	बुध	23/12/2029
शनि	24/06/2025	बुध	20/11/2027	केतु	18/02/2030
बुध	03/11/2025	केतु	07/01/2028	शुक्र	01/08/2030
केतु	27/12/2025	शुक्र	24/05/2028	सूर्य	19/09/2030
शुक्र	31/05/2026	सूर्य	04/07/2028	चंद्र	10/12/2030
सूर्य	17/07/2026	चंद्र	11/09/2028	मंगल	05/02/2031
चंद्र	03/10/2026	मंगल	30/10/2028	राहु	03/07/2031
मंगल	26/11/2026	राहु	03/03/2029	गुरु	11/11/2031

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
23/01/2031		10/02/2032		10/02/2035	
10/02/2032		10/02/2035		05/01/2036	
केतु	14/02/2031	शुक्र	11/08/2032	सूर्य	27/02/2035
शुक्र	19/04/2031	सूर्य	05/10/2032	चंद्र	26/03/2035
सूर्य	08/05/2031	चंद्र	04/01/2033	मंगल	14/04/2035
चंद्र	09/06/2031	मंगल	09/03/2033	राहु	02/06/2035
मंगल	02/07/2031	राहु	20/08/2033	गुरु	16/07/2035
राहु	28/08/2031	गुरु	13/01/2034	शनि	06/09/2035
गुरु	18/10/2031	शनि	06/07/2034	बुध	23/10/2035
शनि	18/12/2031	बुध	08/12/2034	केतु	11/11/2035
बुध	10/02/2032	केतु	10/02/2035	शुक्र	05/01/2036

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
11/11/2031		08/04/2032		08/06/2033	
08/04/2032		08/06/2033		14/10/2033	
केतु	20/11/2031	शुक्र	18/06/2032	सूर्य	15/06/2033
शुक्र	15/12/2031	सूर्य	09/07/2032	चंद्र	25/06/2033
सूर्य	22/12/2031	चंद्र	14/08/2032	मंगल	03/07/2033
चंद्र	03/01/2032	मंगल	08/09/2032	राहु	22/07/2033
मंगल	12/01/2032	राहु	11/11/2032	गुरु	08/08/2033
राहु	03/02/2032	गुरु	07/01/2033	शनि	28/08/2033
गुरु	23/02/2032	शनि	15/03/2033	बुध	15/09/2033
शनि	18/03/2032	बुध	14/05/2033	केतु	23/09/2033
बुध	08/04/2032	केतु	08/06/2033	शुक्र	14/10/2033

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
05/01/2036		06/07/2037		24/07/2038	
06/07/2037		24/07/2038		10/09/2040	
चंद्र	19/02/2036	मंगल	28/07/2037	गुरु	05/11/2038
मंगल	22/03/2036	राहु	24/09/2037	शनि	08/03/2039
राहु	13/06/2036	गुरु	14/11/2037	बुध	27/06/2039
गुरु	25/08/2036	शनि	13/01/2038	केतु	11/08/2039
शनि	19/11/2036	बुध	09/03/2038	शुक्र	19/12/2039
बुध	05/02/2037	केतु	31/03/2038	सूर्य	27/01/2040
केतु	09/03/2037	शुक्र	03/06/2038	चंद्र	01/04/2040
शुक्र	08/06/2037	सूर्य	22/06/2038	मंगल	17/05/2040
सूर्य	06/07/2037	चंद्र	24/07/2038	राहु	10/09/2040

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
14/10/2033		15/05/2034		11/10/2034	
15/05/2034		11/10/2034		30/10/2035	
चंद्र	01/11/2033	मंगल	24/05/2034	राहु	08/12/2034
मंगल	13/11/2033	राहु	15/06/2034	गुरु	28/01/2035
राहु	15/12/2033	गुरु	05/07/2034	शनि	30/03/2035
गुरु	13/01/2034	शनि	29/07/2034	बुध	23/05/2035
शनि	15/02/2034	बुध	19/08/2034	केतु	14/06/2035
बुध	18/03/2034	केतु	28/08/2034	शुक्र	17/08/2035
केतु	30/03/2034	शुक्र	21/09/2034	सूर्य	05/09/2035
शुक्र	04/05/2034	सूर्य	29/09/2034	चंद्र	07/10/2035
सूर्य	15/05/2034	चंद्र	11/10/2034	मंगल	30/10/2035

HoroscopeCart
Mobile / WhatsApp : +91-7835830918
Email : contact@horoscopecart.com
Website : www.horoscopecart.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
10/09/2040		25/03/2043		30/06/2045	
25/03/2043		30/06/2045		06/06/2046	
शनि	04/02/2041	बुध	20/07/2043	केतु	19/07/2045
बुध	15/06/2041	केतु	06/09/2043	शुक्र	14/09/2045
केतु	08/08/2041	शुक्र	22/01/2044	सूर्य	01/10/2045
शुक्र	09/01/2042	सूर्य	04/03/2044	चंद्र	30/10/2045
सूर्य	24/02/2042	चंद्र	12/05/2044	मंगल	19/11/2045
चंद्र	13/05/2042	मंगल	29/06/2044	राहु	09/01/2046
मंगल	06/07/2042	राहु	31/10/2044	गुरु	23/02/2046
राहु	21/11/2042	गुरु	19/02/2045	शनि	18/04/2046
गुरु	25/03/2043	शनि	30/06/2045	बुध	06/06/2046

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
30/10/2035		05/10/2036		13/11/2037	
05/10/2036		13/11/2037		11/11/2038	
गुरु	14/12/2035	शनि	08/12/2036	बुध	04/01/2038
शनि	06/02/2036	बुध	03/02/2037	केतु	25/01/2038
बुध	25/03/2036	केतु	27/02/2037	शुक्र	26/03/2038
केतु	14/04/2036	शुक्र	05/05/2037	सूर्य	13/04/2038
शुक्र	10/06/2036	सूर्य	25/05/2037	चंद्र	14/05/2038
सूर्य	27/06/2036	चंद्र	28/06/2037	मंगल	04/06/2038
चंद्र	26/07/2036	मंगल	22/07/2037	राहु	28/07/2038
मंगल	15/08/2036	राहु	21/09/2037	गुरु	14/09/2038
राहु	05/10/2036	गुरु	13/11/2037	शनि	11/11/2038

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
06/06/2046		04/02/2049		23/11/2049	
04/02/2049		23/11/2049		25/03/2051	
शुक्र	15/11/2046	सूर्य	18/02/2049	चंद्र	02/01/2050
सूर्य	03/01/2047	चंद्र	14/03/2049	मंगल	31/01/2050
चंद्र	25/03/2047	मंगल	01/04/2049	राहु	14/04/2050
मंगल	21/05/2047	राहु	14/05/2049	गुरु	18/06/2050
राहु	14/10/2047	गुरु	22/06/2049	शनि	03/09/2050
गुरु	20/02/2048	शनि	08/08/2049	बुध	11/11/2050
शनि	24/07/2048	बुध	18/09/2049	केतु	09/12/2050
बुध	09/12/2048	केतु	05/10/2049	शुक्र	28/02/2051
केतु	04/02/2049	शुक्र	23/11/2049	सूर्य	25/03/2051

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
11/11/2038		12/03/2042		12/03/2043	
12/03/2042		12/03/2043		10/11/2044	
शुक्र	02/06/2039	सूर्य	30/03/2042	चंद्र	02/05/2043
सूर्य	01/08/2039	चंद्र	30/04/2042	मंगल	07/06/2043
चंद्र	11/11/2039	मंगल	21/05/2042	राहु	06/09/2043
मंगल	21/01/2040	राहु	15/07/2042	गुरु	26/11/2043
राहु	22/07/2040	गुरु	02/09/2042	शनि	02/03/2044
गुरु	31/12/2040	शनि	30/10/2042	बुध	27/05/2044
शनि	12/07/2041	बुध	20/12/2042	केतु	01/07/2044
बुध	31/12/2041	केतु	11/01/2043	शुक्र	11/10/2044
केतु	12/03/2042	शुक्र	12/03/2043	सूर्य	10/11/2044

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
25/03/2051		29/02/2052		24/07/2054	
29/02/2052		24/07/2054		27/07/2057	
मंगल	14/04/2051	राहु	09/07/2052	शनि	14/01/2055
राहु	04/06/2051	गुरु	03/11/2052	बुध	19/06/2055
गुरु	19/07/2051	शनि	22/03/2053	केतु	22/08/2055
शनि	11/09/2051	बुध	24/07/2053	शुक्र	21/02/2056
बुध	29/10/2051	केतु	13/09/2053	सूर्य	16/04/2056
केतु	18/11/2051	शुक्र	06/02/2054	चंद्र	17/07/2056
शुक्र	14/01/2052	सूर्य	22/03/2054	मंगल	19/09/2056
सूर्य	31/01/2052	चंद्र	03/06/2054	राहु	02/03/2057
चंद्र	29/02/2052	मंगल	24/07/2054	गुरु	27/07/2057

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
10/11/2044		10/01/2046		10/01/2049	
10/01/2046		10/01/2049		11/09/2051	
मंगल	05/12/2044	राहु	24/06/2046	गुरु	20/05/2049
राहु	07/02/2045	गुरु	17/11/2046	शनि	21/10/2049
गुरु	05/04/2045	शनि	09/05/2047	बुध	08/03/2050
शनि	11/06/2045	बुध	12/10/2047	केतु	04/05/2050
बुध	11/08/2045	केतु	14/12/2047	शुक्र	13/10/2050
केतु	04/09/2045	शुक्र	14/06/2048	सूर्य	01/12/2050
शुक्र	15/11/2045	सूर्य	08/08/2048	चंद्र	20/02/2051
सूर्य	06/12/2045	चंद्र	07/11/2048	मंगल	18/04/2051
चंद्र	10/01/2046	मंगल	10/01/2049	राहु	11/09/2051

HoroscopeCart
Mobile / WhatsApp : +91-7835830918
Email : contact@horoscopecart.com
Website : www.horoscopecart.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

1	मूलांक	3
3	भाग्यांक	8
1, 4, 8, 9, 3	मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 8
5, 6	शत्रु अंक	1, 4,
19,28,37,46,55	शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शनि, बुध, शुक्र	शुभ दिन	बुध, शुक्र
शनि, बुध, शुक्र	शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
कर्क, धनु	मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
सिंह, मकर, मीन	मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
हनुमान	अनुकूल देवता	गणेश
हीरा	शुभ रत्न	पन्ना
जरकिन, ओपल	शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
नीलम	भाग्य रत्न	हीरा
रजत	शुभ धातु	कांसा
रजत	शुभ रंग	हरित
दक्षिणपूर्व	शुभ दिशा	उत्तर
सूर्योदय	शुभ समय	सूर्योदय के बाद
मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन	दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
चावल	दान अन्न	मूँग
दूध	दान द्रव्य	घी

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - Boy

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - Girl

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

Boy

जीवन रत्नः	हीरा	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
भाग्य रत्नः	नीलम	दम्पति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
कारक रत्नः	पन्ना	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
शुभ उपरत्नः	लहसुनिया	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति

Girl

जीवन रत्नः	पन्ना	दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	हीरा	दम्पति, भाग्योदय, धन
कारक रत्नः	नीलम	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
शुभ उपरत्नः	गोमेद	सन्तति सुख

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/03/1987-16/12/1987
साढेसाती प्रथम ढैया	10/08/1995-16/04/1998
साढेसाती द्वितीय ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढेसाती तृतीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती प्रथम ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती प्रथम ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढेसाती तृतीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दाम्पत्य कलह
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/04/1990-06/03/1993
साढेसाती प्रथम ढैया	05/06/2000-22/07/2002
साढेसाती द्वितीय ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती तृतीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2009-15/11/2011

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/01/2020-21/07/2022
साढेसाती प्रथम ढैया	11/04/2030-25/05/2032
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती तृतीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/06/2039-06/03/2041

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/07/2049-17/02/2052
साढेसाती प्रथम ढैया	22/05/2059-05/07/2061
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/08/2068-25/10/2070

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	व्यावसाय
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	अल्प बचत
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

Boy

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Girl

आपकी जन्मकुण्डली में पद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक के विद्याध्ययन में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है। परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान समाप्त हो जाता है। सन्तान प्रायः विलम्ब से प्राप्त होती है या उसको होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित होता है। पुत्र सन्तान की प्रायः चिन्ता बनी रहती है। जातक का स्वास्थ्य कभी असामान्य हो जाता है।

इस योग के कारण दाम्पत्य जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवार में जातक को अपयश मिलने का भय बना रहता है और जातक के मित्रगण स्वार्थी होते हैं और वे सब जातक का पतन कराने में सहायक होते हैं। कभी जातक को तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के गुप्त शत्रु रहते हैं। वे सब थोड़ा बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। लाभ मार्ग में आंशिक बाधा उत्पन्न होती है एवं चिन्ता कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है। जातक द्वारा संग्रहीत सम्पत्ति को प्रायः दूसरे लोग हरण कर लेते हैं। जातक को कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है और रोग व्याधि में अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट जातक के ऊपर उपस्थित हो जाता है तथा जातक वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है एवं कभी-कभी जातक के मन में सन्यास ग्रहण करने की भावना जागृत हो जाती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में कई सफलता मिलती हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।

5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	बुध	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

Boy का वर्ग मृग है तथा Girl का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Boy और Girl का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Boy मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

Girl मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Girl कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Boy तथा Girl में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Boy का वर्ण क्षत्रिय तथा Girl का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाव से Girl वैश्विक मां की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा सभी की देखभाल तथा सेवा बिना थके, बिना शिकायत किये करती रहेगी। साथ ही परिवार के किसी भी सदस्य अथवा Boy से कभी तर्क-वितर्क नहीं करेगी। अपने इसी आतिथ्य भाव के कारण सभी की प्रशंसा का पात्र बनेगी।

वश्य

Boy का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं Girl का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि पशु एवं मनुष्य के स्वभाव एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं अतः दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग हो सकते हैं किंतु फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में रहेंगे। फिर भी कभी-कभी मनुष्य निर्दयी एवं आक्रामक हो जाता है। इसी प्रकार Boy एवं Girl एक-दूसरे के साथ रहकर अपने जीवन का आनंद लेते रहेंगे किंतु कभी-कभी Girl क्रूर एवं अमर्यादित व्यवहार का प्रदर्शन करती रहेगी।

तारा

Boy की तारा प्रत्यरि तथा Girl की तारा साधक है। Boy की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत Boy कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप Girl को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

Boy की योनि गज है तथा Girl की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम

की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Boy का राशि स्वामी Girl के राशि स्वामी से शत्रु का संबंध रखता है। जबकि Girl का राशि स्वामी Boy के राशि स्वामी के साथ सम रहता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए शत्रु किंतु दूसरा उसे सम मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

Boy का गण मनुष्य तथा Girl का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में Girl सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर Boy व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण Boy अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

Boy से Girl की राशि तृतीय भाव में स्थित है तथा Girl से Boy की राशि एकादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण Boy अति महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा अच्छा कमाने वाले होंगे। दूसरी ओर Girl सद्गुणी, परिश्रमी, सहयोगी एवं दयालु होंगी तथा अपने पति की हर क्षेत्र में हर संभव सहायता करेंगी। दोनों के बीच मधुर तालमेल, एक-दूसरे की अच्छी समझ होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों।

नाड़ी

Boy की नाड़ी मध्य है तथा Girl की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का समन्वय अति उत्तम होता है क्योंकि यह जीवनी शक्ति को संतुलित करता है। तीनों जीवनी शक्तियों वात, पित्त एवं कफ का संतुलन जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः आपकी संतान उत्तम स्वास्थ्य, जनन क्षमता एवं स्वस्थ तथा बुद्धिमान संतान होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

Boy की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त मेष है तथा Girl की वायुतत्व युक्त मिथुन राशि है। अग्नि और वायु के परस्पर सम्बन्ध मित्रता के हैं अतः इन दोनों में भी सामान्यतया शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर समानता रहेगी तथा सामान्य मतभेदों के बावजूद जीवन में खुशी एवं प्रसन्नता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

Boy का राशि स्वामी मंगल तथा Girl का राशि स्वामी बुध एक दूसरे के शत्रु हैं। यह ग्रह स्थिति दाम्पत्य सुख के लिए विशेष अनुकूल नहीं है। अतः जीवन में विभिन्न प्रकार के विरोधाभासों का इनको सामना करना पड़ेगा तथा अवसरानुकूल एक दूसरे के प्रति भी वैमनस्य का भाव रखेंगे जिससे जीवन में अनावश्यक अशांति तथा परेशानियां रहेंगी। अतः एक दूसरे की भावनाओं को समयानुसार आदर प्रदान करके ही आप उपरोक्त समस्याओं को कम कर सकते हैं।

Boy की राशि Girl की राशि से एकादश तथा Boy की Girl से तृतीय भाव में पड़ती है यह शुभ भकूट है। इसके प्रभाव से आपकी परस्पर प्रेम एवं स्नेह की भावना में वृद्धि होगी तथा एक दूसरे को समझने में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन में किंचित सुख एवं शांति की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आर्थिक एवं अन्य सुख सुविधाओं का उपभोग करने में भी समर्थ रहेंगे।

Boy का वश्य चतुष्पद है तथा Girl का मानव। इसके प्रभाव से आपकी स्वाभाविक अभिरूचियों में स्पष्ट अंतर दृष्टिगोचर होगा तथा वैवाहिक जीवन में स्नेह एवं सुख में ईर्ष्या के भाव की भी उत्पति होने की संभावना रहेगी। यदि Boy, Girl की स्वतंत्र प्रेम प्रवृति को समझ सकें तथा Girl भी Boy की काम भावनाओं का आदर करें तो इनका जीवन सुखमय हो सकता है।

Boy का वर्ण क्षत्रिय है जिससे वह साहसी एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा Girl का वर्ण शूद्र है इसके प्रभाव से वह कर्तव्य परायण होगी तथा किसी भी प्रकार के कार्य में विशेष रूचि का प्रदर्शन करके उसे करने में तत्पर हो जाएंगी।

धन

Boy और Girl की तारा एक दूसरे के लिए सम रहेगी। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। Boy और Girl की राशि तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उनकी आय में नित्य वृद्धि होगी जिससे अर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी। साथ ही मंगल का प्रभाव भी सम रहेगा। अतः धनार्जन होता रहेगा।

Girl एक सौभाग्यशाली महिला होंगी अतः उन्हें अचानक धन प्राप्ति की पूर्ण

संभावना होगी। यह लाटरी या सट्टे या किसी अन्य माध्यम से हो सकता है। साथ ही पैतृक सम्पति या जायदाद भी उनको मिलेगी जिससे दम्पति धन एवं ऐश्वर्य से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

Boy की नाड़ी मध्य तथा Girl की नाड़ी आद्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में जन्म होने के कारण इनके स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा गंभीर समस्याओं से ये सुरक्षित रहेंगे परन्तु Girl के स्वास्थ्य पर मंगल का अशुभ प्रभाव विद्यमान होगा। इसके प्रभाव से वे रक्त या पित संबंधी रोगों से समय समय पर कष्ट की प्राप्ति करेंगी। साथ ही गुप्त या धातु संबंधी रोगों से भी उनको जीवन में यदा कदा परेशानी की अनुभूति हो सकती है। अतः मंगल के इस दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास रखने चाहिए। इससे उपरोक्त समस्याओं में न्यूनता आएगी।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Boy और Girl का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Boy और Girl के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Girl के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Girl को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Girl को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Boy और Girl सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Boy और Girl का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Girl के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत Girl के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

Girl अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता

पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार Girl के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

Boy के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को Boy अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी Boy के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण Boy के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

लग्न फल

Boy

आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण में वृष लग्नोदय काल में हुआ था। उस क्षण मेदिनीय क्षितिज पर कन्या नवमांश एवं मकर राशि का द्रेष्काण उदित था। फलस्वरूप इस बात का द्योतक है कि आप (जन्मकाल) बाल्यावस्था से ही निश्चित रूप से सुखी, सुलभ, स्नेहयुक्त एवं आनंन्दित जीवन व्यतीत करेंगे। आप सदैव ही नारी तथा धन से युक्त रहकर आनंद प्राप्त करेंगे।

आप सफलता प्राप्ति हेतु अंतिम क्षण तक सत्प्रयास करते रहेंगे मुख्यतः आप जीवन के 28 वें वर्ष के पश्चात् अपने परिश्रम को साकार कर लेंगे।

यद्यपि आप सहज स्वभाव के प्राणी हैं। आप में कुछ मुख्य गुण है कि आप प्रशंसनीय व्यक्ति हैं। आप उतावला होकर शीघ्रता पूर्वक कोई भी निर्णय नहीं लेतें बल्कि शांत चित्त हो खूब सोच विचार करने के पश्चात् अपने विवेक से दूसरा कदम उठाते हैं।

आप अपनी योजना को तुलनात्मक ढंग से विभिन्न प्रकारेण अनुकूलता एवं प्रतिकूलता के संबंध में विस्तारपूर्वक अध्ययनकर कार्यरूप देते हैं। इसके पश्चात् अपनी आंकाक्षा को एकाग्रचित होकर संबंधित प्रस्ताव को समर्पित करते हैं। परंतु आप यदा-कदा स्वभाव से प्रीतिपूर्वक व्यवहार करते है जो आपके लिए बोझ-स्वरूप दबाव पूर्ण हो सकता है। इसलिए आपको एक बार ऐसा विचार करना चाहिए कि अपनी बुनियादी गुण को त्याग कर ही अपने विषयक कार्य को सफलता के द्वार तक पहुंचा सकते हैं।

आपको शारीरिक सुख भोग के लिए सतत कठिन परिश्रम करके ही पुरष्कार स्वरूप धन, संपत्ति प्रतिष्ठा एवं आरामदायक जीवन व्यतीत करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आप एक बार प्रगति के पथ पर अग्रसर हुए तों आपकी अपेक्षित धन संचय की लालशा पूरी हो जाएगी तथा बहुत अधिक धन संचय कर लेंगे। क्योंकि आप महान कृपण हैं अतः जीवन पर्यंत धन संपत्ति संचय करते रहेंगे।

आपको बहुत धनोपार्जन हेतु सुदंर एवं अनुकूल व्यवसाय आरामदायक वस्तुओं का व्यवसाय कृषि उपस्करों का व्यवसाय, वित्तीय (लेन-देन) दलाली का व्यवसाय, कलात्मक वस्तुओं का व्यवसाय, रत्नादि एवं ट्रांसपोर्ट (मालवाहक) संबंधी कार्यों के द्वारा अतिरिक्त धन उपार्जन कर सकेंगे।

आप सदैव ही विपरीत योनि के साथ आंख मिलाते रहना चाहते हैं। आप सदैव कामुकता पूर्ण आनंद प्राप्त करना पसंद करते हैं। अंततः आपके महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील जनेन्द्रीय को क्षति होने की आशंका है। अस्तु उत्तम यह है कि आप इस प्रवृत्ति का त्याग कर दें।

आप निरंतर सुखद एवं शांतिपूर्ण घरेलू जीवन व्यतीत करेंगे। यह संभाव्य है कि आप मुख्यतया अपना सर्वोत्कृष्ट जीवन साथी बनाएंगे।

वृष राशीय जातक को निर्देश है कि आप अपने पति/पत्नी अथवा मित्रता के लिए उपयुक्त राशि कन्या, मकर, मीन एवं वृश्चिक राशि के जातक अनुकूल हैं। इन राशियों का योग मानवीय एवं आनंददायक होगा। आप सदैव ही अपने पारिवारिक प्रसन्नता हेतु बहुत कुछ करते रहते हैं। आप वांछनीय एवं स्वस्थ्य जीवन के लिए सभी वांछित वस्तुओं की व्यवस्था एवं समर्पण करते हैं।

यद्यपि आप विस्तृत सम्पत्ति के स्वामी होंगे। आप शांतचित्त हृष्ट-पुष्ट शरीर से युक्त, संवेदनशील एवं जीवन में कुछ समय के बाद हल्के रोगों की आशंका है। आप गले के संक्रमण, कफ एवं शीत प्रभाव से शरीर में फोड़ा-फुंसी, दाद खुजली एवं शारीरकि पीड़ा से पीड़ित रहेंगे। अस्तु समय-समय पर अपने पारिवारिक चिकित्सक से संबंधित रह कर, इन रोगों के प्रति सतर्क रहें।

सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरूवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

आपके लिए अंक 2 एवं 8 अंक अनुकूल और महत्वपूर्ण है। परंतु अंक 5 आपके लिए त्याज्य है।

आपके लिए सभी रंगों में सुंदर एवं अति उत्तम रंग सफेद, हरा एवं गुलाबी रंग है। रंग लाल आपके लिए त्याज्य है।

Girl

आपका जन्म हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में कन्या लग्न के उदयकाल में हुआ था। साथ ही उस समय मेदिनीय क्षितिज पर मेष राशि का नवमांश एवं मकर राशि का द्रेष्काणा भी उदित था। जिसके प्रभाव से यह स्पष्ट हो रहा है कि आप द्विस्वाभात्मक गुणों युक्त हैं। आप धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर धर्म मार्ग में प्रवीण हो गई हैं तथा यह सन्देहास्पद विषय है कि आप इस मार्ग के सहारे अपने लक्ष्य को सम्पादित कर सकेंगी।

आप कुप्रवृति से दूसरों को सताकर धन का संचय करेंगी। ऐसा प्रतीत होता है कि आप धन की सुनिश्चितता के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं। आप किसी को भी आकर्षित कर अर्थात प्रलोभन देकर विश्वास दे सकती हैं। आप निष्ठुर उद्दमी एवं परिश्रमी अध्यवसायी प्रवृति की हैं। आप किसी को भी आकर्षित कर अर्थात प्रलोभन देकर विश्वास दे सकती हैं और मनुष्योचित जरूरतों की पूर्ति हेतु आप कोई स्पष्ट चाल चलकर अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु पश्चाताप करोगी। आप प्रसन्नचित एवं भाग्यशाली महिला हैं। आप संसारिक सुख का आनन्द प्राप्त करेंगी। आप अच्छे हृदय से अनेक प्रकार के सामाजिक कार्य में भाग लेगीं। आप सदैव ही सभी के प्रेम सहवास की आकांक्षा रखेंगी।

आप कई वर्षों तक वैवाहिक संस्कार ग्रहण नहीं करेंगी। परन्तु जब आप एक वार अपने जीवन साथी का चयन कर लेंगी तो विवाहोपरान्त उसमें जोंक की तरह चिपक जाएँगी।

अर्थात सदैव उसके तन-मन के साथ रहेंगी। यह सत्य है कि आप अपने परिवार के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगी। आपके पति आपके साथ एक पति की अनिवार्य भूमिका अदा करेंगे तथा सदैव ही प्रसन्नता की बिन्दु तलाश कर आपको प्रसन्न रखेंगे। आप अपने पति के माध्यम से सदैव ही अच्छी सन्तान ग्रहण करेंगी। आपको उसके सम्बन्ध में कदापि भी उदासीन एवं चिन्तनीय दशा नहीं रहेगी। वह निश्चित रूप से आपकी सन्तान को शिक्षित कर सुविधापूर्वक जीवन को व्यवस्थित कर देंगे।

आपकी सामुद्रिक विदेश की यात्रा सभी प्रकार से मधुर मंगलमय नहीं होगी। आप स्वयं के बचाव के लिए प्रभावशाली बंधन पाल रखा है जो जीवन को अवरोधक एवं द्वन्दात्मक बना दिया है। आप निश्चित रूप से स्वतः एकाग्रतापूर्वक एकमत से विचार कर किसी भी विषय को सम्पादित करने के लिए सक्षम हैं। परन्तु सम्प्रति आपकी बुद्धि अस्थिर है। आप पुनः अव्यवस्था का प्रतिकार कर लिया है तथा आपको सुव्यवस्थित समय का लाभ प्राप्त होगा। आपकी यह विशेषता है कि आप स्वच्छन्द रहती हैं। आप अपने मस्तिष्क को विषय वस्तु की ओर प्रवृत कर आप पुनः उत्साह पूर्वक कार्यारम्भ करने के लिए तैयार हो जाऐं।

यदि आप अपनी स्वास्थ्य रक्षा चाहती हैं तथा युवावस्था का लाभ प्राप्त करना चाहती हैं। अपनी युवावस्था अर्थात मध्यम आयु का आनन्द एवं लाभ प्राप्त करें। आप अपनी जीवन पद्धति की ह्रासमुखी अवधारणा को बदल सकती हैं। अन्यथा आप ज्यो-ज्यों आयु पथ पर प्रौढ़ता प्राप्त करती जाएंगी। आपको मध्यपान का अनुभव प्राप्त होगा और आपको रूग्नकारी प्रभाव से प्रभावित कर देगा। वैसे आप किसी विषम रोग से आक्रान्त तो नहीं होगीं। परन्तु आपको सिरोवेदना, पीठ के दर्द, ट्यूमर एवं रक्तचाप वृद्धावस्था में कष्टकर न हो। अतः सतर्कता बरतनी चाहिए। सम्प्रति आप दीर्घ जीवन व्यतीत करने के प्रति आश्वस्त रहें। आपको संभावित रोगादि के प्रति सुरक्षात्मक अभिरूचि रखना चाहिए ताकि आपका जीवन रोग मुक्त एवं सुरक्षित रहे।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए वास्तव में अंक 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक अनुकूल हैं तथा अंक 1 एवं 8 अंक आपके लिए त्यागनीय है।

आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली रंग पीला, सूआपंखी, हरा रंग है। आपके लिए रंग लाल, बल्लू एवं काला रंग प्रतिकूल है।